2

आपका विवाह सफल हो सकता है ...

विवाह के लिए परमेश्वर की योजना को समझ लेने से

जो लोग सफल वैवाहिक जीवन चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि किसी भी प्रकार के सुझाव के लिए उसके पास आएं, जिसने विवाह का नियम बनाया यानी उस परमेश्वर के पास जिसने आरम्भ में इस सृष्टि की रचना की। वह हमारा सृष्टिकर्त्ता है, इस कारण वह अच्छी तरह से जानता है कि हमारे लिए सबसे बढ़िया क्या है? उसने विवाह को बनाया, इस कारण विवाह के लिए उसके ही नियमों का पालन किया जाए तो वही तलाक की समस्या का समाधान निकालेगा।

मत्ती 19:3-9 शायद परमेश्वर द्वारा दी गई विवाह की योजना की खोज करने वाला है, वो है:

> तब फरीसी उस की परीक्षा करने के लिए पास आकर कहने लगे, क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है? उस ने उत्तर दिया, ''क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि जिस ने उन्हें बनाया, उस ने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा, कि इस कारण मुनष्य अपने माता-पिता और वे दोनों एक तन होंगे? सो वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं: इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे। उन्होंने उससे कहा, फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया, त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे? उसने उनसे कहा, मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी-अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी, परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था। और मैं तुम से कहता हूं, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से, अपनी पत्नी को त्यागकर, दूसरी से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है: और जो उस छोड़ी हुई से ब्याह करे, वह भी व्यभिचार करता है।''

यीशु ने विवाह के स्थायी होने की शिक्षा दी

जब परमेश्वर ने इसकी योजना बनाई तो उसका मकसद यही था कि विवाह ''जब तक मृत्यु हमें अलग न करे'' तब तक चले। जब फरीसियों ने मत्ती 19 में उससे प्रश्न पूछा तो वे यह चाह रहे थे कि उस समय जो बहस चल रही थी वह भी उसमें भाग ले। उन्होंने उसको पूछा कि व्यवस्थाविवरण 24 का क्या अर्थ है, जिसमें व्यवस्था एक पुरुष के अपनी पत्नी ''लज्जा की बात'' पाए तो वह उसे तलाक दे सकता है। कुछ रब्बियों ने तो इसकी इस तरह से व्याख्या की कि अगर पति को पत्नी द्वारा किया गया काम अच्छा न लगे यानी उदाहरण के लिए अगर उससे रोटी जल जाए, तो वह उसे तलाक दे सकता है। कुछ लोगों को लगता है कि लज्जा का काम सिर्फ व्यभिचार है। इसलिए, उन्होंने पूछा कि क्या पुरुष ''किसी भी कारण'' से पत्नी को

तलाक दे सकता है।

यीशु ने यह कहते हुए उत्तर दिया कि परमेश्वर ने विवाह की जो योजना बनाई थी, उससे तलाक न तो कभी विवाह का भाग था और न ही है। परमेश्वर ने शुरू से ही चाहा कि पति-पत्नी जीवनभर के लिए विवाह करें। फरीसियों को यीशु के पहले जवाब ने कि ''जिसे ... परमेश्वर ने जोड़ा, उसे कोई अलग न करे'' यह साबित कर दिया कि तलाक परमेश्वर की योजना में शामिल नहीं है। एक पुरुष, एक पत्नी, जीवन भर के लिए: यही परमेश्वर की योजना है।

यद्यपि इसमें एक अपवाद है। जब फरीसी जिद करने लगे तो यीशु ने कहा कि अगर एक पुरुष अपनी पत्नी को व्यभिचार के कारण तलाक और दूसरा उससे विवाह कर लेता है तो वह व्यभिचार नहीं करता।[1] पवित्र शास्त्र के अनुसार इसी स्थिति में व्यभिचार के कारण तलाक की अनुमति है।

ऐसे हालात में तलाक की अनुमति तो दी जाती है, पर इसकी आवश्यकता नहीं है। अगर पति या पत्नी में से कोई भी व्यभिचार करता है और बेगुनाह साथी उसे माफ कर देता है तो दम्पत्ति इकट्ठे रह सकते हैं।

यह तथ्य कि व्यभिचार करने पर तलाक की अनुमति है, यह दर्शाता है कि व्यभिचार का पाप कितना भयानक है कि अकेले इस पाप के कारण विवाह का रिश्ता टूट सकता है।

फिर भी इस बात को महत्व देना जरूरी है कि ''वचन के अनुसार तलाक''[2] अपवाद है। कई बार इस अपवाद के कारण मसीही लोग इतने परेशान होते हैं कि वे उस नियम को तो बिल्कुल भूल जाते हैं-विशेषकर यह कि एक पुरुष और उसकी पत्नी को विवाहित रहना चाहिए। सचमुच उनमें तलाक नाम की कोई चीज़ नहीं होनी चाहिए। कलीसिया के सदस्यों को अपना समय तलाक और दोबारा शादी जैसे विषयों पर बहस करके बर्बाद नहीं करना चाहिए और विवाह के स्थायीत्व पर शिक्षा को नज़रअंदाज़ नहीं करना चाहिए।

तलाक और पुनर्विवाह पर कुछ प्रश्नों के उत्तर देना आसान नहीं है। यह जाना जा सकता है कि बाइबल तलाक पर क्या बताती है पर कई बार कुछ मामलों में बाइबल की शिक्षा का इस्तेमाल करना कठिन हो जाता है। लोगों ने अपने जीवनों को ऐसे बन्धनों में बान्धा होता है कि उन्हें खोलने के ढंग का निर्णय लेने के लिए सुलैमान की बुद्धि ही चाहिए। एक सच्चाई पर तो हम विश्वास कर सकते हैं कि पति-पत्नी को इकट्ठे रहना चाहिए।

मसीही दृष्टिकोण से ''अच्छा'' तलाक जैसी कोई चीज़ नहीं है। वचन के अनुसार तलाक हो सकता है-लेकिन इस तलाक के अनुसार एक साथी ने व्यभिचार किया होता है। विवाह का यह कितना दर्दनाक अन्त है। अगर तलाक वचन के अनुसार नहीं है तब एक या दोनों पक्ष परमेश्वर के विवाह के नियम को नहीं मान रहे हैं और यह बहुत भयानक है।

तलाक समाधान नहीं है बल्कि तलाक एक समस्या है, जो कई समस्याओं को जन्म देती है, जिनका समाधान नहीं हो सकता। तलाक वित्तीय समस्या, पारिवारिक समस्या, भावनात्मक समस्या, कानूनी समस्या और धार्मिक समस्या को जन्म देती है। तलाक केवल तलाक लेने वाले दम्पत्ति पर ही असर नहीं डालता। यह नकारात्मक रूप से उनके बच्चों पर, उनके परिवारों और दोस्तों पर और समाज पर भी असर डालता है।

पांच लोग जिनका तलाक हो चुका था, अपनी एक मित्र के साथ बातचीत कर रहे थे, जो

अपने पति से तलाक लेने की सोच रही थी, उसे रोकने के लिए वे कुछ चीज़ों की सूची बताने लगे, जिनका उन्हें लगता था कि काश तलाक लेने से पहले पता होता। उस सूची में यह तथ्य था कि जब आप तलाक लेते हैं तो ''आप दूसरे के लिए समस्याएं खड़ी कर देते हैं।'' ''यहां तक कि बहुत मधुर ब्रेकअप घाव देता है। तलाक के परिणाम होते ही हैं।'' वह व्यक्ति जिसका तलाक हुआ होता है उसे एक ''बेकार चीज़'' समझा जाता है। उन्होंने यह भी नोट किया कि ''तुम्हारा तलाक सिर्फ तुम पर और तुम्हारे साथी ही असर नहीं डालता है''-बल्कि कलीसिया के लोगों, परिवार के सदस्य आपके बच्चे इत्यादि पर भी प्रभाव छोड़ता है। तलाक के ''वित्तीय नुकसान'' भी होते हैं।[3]

तलाक नाम की बीमारी का एक ही इलाज है: परहेज़! एक दम्पत्ति के तलाक के बाद बच्चों और सम्पत्ति का क्या होगा, इस समस्या का समाधान कैसे कर सकता है। लोग सामाजिक कलंक का सामना कैसे कर सकते हैं। पुनर्विवाह की समस्या क्या है? सबसे पहले वास्तविक समाधान तो यही है कि तलाक न लें।

आप तलाक की समस्या से कैसे बच सकते हैं? जबकि आज के संसार में जहां ''विवाह की कस्में तो बड़ी सहजता से खाई जाती हैं, पर उन्हें आसानी से तोड़ भी दिया जाता है,'' आप और आपका जीवनसाथी अब से तलाक लिए बिना कैसे इकट्ठे रह सकते हैं?

यीशु ने बताया कि विवाह कैसे टिकाऊ बन सकता है

यीशु के कथन में, विवाहित दम्पत्ति को दो सुझाव दिए गए, जिसके द्वारा वह पक्का कर सकते हैं कि उनका विवाह बना रहेगा।

विवाह के स्थायीत्व को मानें

पहला, पति-पत्नी के लिए यह ज़रूरी है कि वे अपने विवाह के स्थायीत्व को स्वीकार करें। यह शब्द ''जब तक हमें मृत्यु अलग न करे'' केवल विवाह इकरार का ही हिस्सा न बनें; इस सुझाव को अपने जीवन में लागू करें। पति-पत्नी दोनों के लिए इस तथ्य को मानना जरूरी है कि उनके लिए तलाक एक विकल्प नहीं है!

अगर उन्होंने इस सच्चाई को मान लिया तो जब भी उनके विवाहित जीवन में कोई मुश्किल आएगी-जैसे कि आती है-उन्हें यह कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, ''ओह, नहीं! हमारी इस समस्या का समाधान नहीं हो रहा: हम तलाक ही ले लेते हैं।'' बल्कि जब भी कोई मुश्किल खड़ी होगी वे उन दो खरगोशों की तरह होंगे, जिनके पीछे एक लोमड़ी पड़ी हुई हो। ''क्या तुम्हें विश्वास है कि हम लोमड़ी से बचकर भाग निकलेंगे?'' एक ने दूसरे से पूछा। ''करना ही पड़ेगा।''[4] दूसरे ने उत्तर दिया। यदि वे सचमुच विवाह के स्थायीत्व में विश्वास रखते हैं तो पति-पत्नी समस्या के हल के लिए मिलकर काम करेंगे। क्यों? क्योंकि उन्हें यह ''करना पड़ेगा''-क्योंकि उन्हें करना पड़ेगा। उनके पास तलाक ही एक विकल्प नहीं है।

इस तथ्य को स्वीकार करना कि विवाह जीवन भर का साथ है, इस बात पर भी निर्भर करता है कि एक व्यक्ति कैसा जीवन साथी पसन्द करता है। विवाह के लिए एक साथी ढूंढ़ते हुए, एक जवान व्यक्ति के लिए यह ज़रूरी है कि वह ऐसा साथी ही तलाश न करें जो देखने में सुन्दर

हो, बल्कि उसे यह पूछना चाहिए ''क्यों मैं इस व्यक्ति के साथ अपना शेष जीवन बिताऊंगा?'' यह सोच जवान लोगों को अपने साथी में उसकी अलग-अलग खूबियां ढूंढ़ने को प्रेरित करेगी न कि बाहरी सुन्दरता, जैसे आम तौर पर होता है। चाल-चलन, समझदारी, परिश्रम, ज़िम्मेदारी, गुण, दयालुता-यह सब खूबियां एक अच्छे जीवन साथी में होनी चाहिए न कि खूबसूरती और शारीरिक आकर्षण।

विवाह में एकता के लिए प्रयास करें

दूसरा-दम्पत्ति को एकता के लिए भरसक प्रयास करना चाहिए। पति-पत्नी की एकता विवाह के लिए परमेश्वर की योजना का एक भाग है। जैसे यीशु ने बताया कि एकता में ''छोड़ना,'' ''लिपटना'' और ''बनना'' सब शामिल है।

छोड़ना। पति-पत्नी को ''अपने'' माता-पिता को छोड़ना पड़ता है। आमतौर पर यह छोड़ना शारीरिक होता है जिसमें नवविवाहित दम्पत्ति अपने घर में रहने लगते हैं। चाहे वे अपने माता-पिता से अलग रहें या न उन्हें अपने माता-पिता को मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक तौर पर ''छोड़ना'' ही पड़ता है। वे बन्धन, जिससे वे माता-पिता पर निर्भर रखते हैं, उन्हें ढीला करना पड़ता है। माता-पिता जीवन भर खास होते हैं; लेकिन विवाह के बाद की ज़िम्मेदारियां बदल जाती हैं। उसकी पहली निष्ठा माता-पिता के प्रति नहीं रहती। पति या पत्नी का पहला लगाव (परमेश्वर के बाद) उसके माता-पिता नहीं, बल्कि उसका जीवन साथी होता है।

यह तथ्य कि पुरुष और स्त्री विवाह के बाद अपने माता-पिता को छोड़ देंगे, इस सच्चाई पर मुहर लगता है कि *विवाह वयस्कों के लिए* है। विवाह उन लोगों के लिए है जो इतने समझदार हो कि अपने लिए खुद कमा सकें और ज़िम्मेदारी को उठा सकें ताकि अपने घर-बार की हर दिन की ज़िम्मेदारियों को सुचारु रूप में निभा सकें।

मिले रहना। विवाहित दम्पत्ति को एक-दूसरे के साथ ''मिले'' रहना चाहिए (उत्पत्ति 2:24; KJV)। इस सर्वनाम का तात्पर्य यह है कि उन्हें आपस में ''मिलकर'' इकट्ठे रहना चाहिए (उत्पत्ति 2:24; मत्ती 19:5; NASB; NRSV)। NIV में अनुवाद किया गया है ''... एक आदमी ... पत्नी से मिला रहेगा, और AB में और शब्द दम्पत्ति हैं,'' पुरुष ... अपनी पत्नी से जुड़ा रहेगा (जुड़े रहेंगे, अलग न होने के लिए)। विवाह मिलकर रहने का ही नाम है!

कई बार पति-पत्नी के लिए यह आवश्यक होता है कि वे अलग हों। प्रचारक कई बार सिखाने और प्रचार करने के लिए जाते हैं या मिशन ट्रिप पर जाते हैं। एक पत्नी के लिए यह आवश्यक होता है कि वह उसके जाने के बाद बूढ़े माता-पिता का ध्यान रखे, बच्चों की मदद करे या नाती-पातों को सम्भालें। पति के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने बिजनेस के सिलसिले में बाहर जाए। ऐसे अलग होना एक मज़बूरी है ना कि नियम। विवाह का असली अर्थ है, दो लोगों का साथ रहना, साथ काम करना, इकट्ठे खाना, इकट्ठे खेलना और-मसीहियों के लिए-इकट्ठे आराधना और प्रार्थना करना। परिणामस्वरूप पति-पत्नी को उन मौकों के लिए योजना बनानी चाहिए, जब वे इकट्ठे हों। उन्हें अपनी-अपनी आदतों और नज़रिये को बदलना चाहिए ताकि वह इकट्ठे हंसी-खुशी समय बिता सके।

एक बनना। विवाहित दम्पत्ति को ''एक बनना'' चाहिए। मत्ती 19:5 के संदर्भ में (और

उत्पत्ति 2:24), यह कथन ''दोनों एक तन होंगे'' सम्भावित तौर पर पति-पत्नी के बीच शारीरिक सम्बन्ध की ओर संकेत करता है, जिसमें पति-पत्नी एक-दूसरे के नज़दीक आकर ''एक'' हो जाते हैं। विवाह में शारीरिक सम्बन्ध भी सम्मिलित हैं।

विवाह में पति-पत्नी शारीरिक रूप से एक नहीं होते, बल्कि कानूनी रूप में भी एक हो जाते हैं। उन दोनों को सरकार के द्वारा भी टैक्स के सम्बन्ध में एक ही समझा जाता है। उन्हें अपने लक्ष्य, अपने सपनों और अपनी महत्वाकांक्षा में भी एक ही होना चाहिए। सम्भवतया उन्हें आत्मिक रूप में भी एक होना चाहिए। कोई भी विवाह को मज़बूती प्रदान करने में मदद नहीं कर सकता, सिवाय इसके कि पति-पत्नी अच्छे वफ़ादार मसीही बनने का इकरार करें और कोई ताकत विवाह को स्थिर रखने में मदद नहीं कर सकती।

विवाह फिर एक प्रक्रिया है, जिसमें दो लोग इकट्ठे होते हैं ताकि अब वे ''दो न रहे, लेकिन एक हों।'' विवाह की भाषा में ''मैं प्रत्येक साथी का'' और ''मेरा'' ''हम'' और ''हमें'' और ''हमारा'' से कम महत्वपूर्ण हो जाता है। इस नमूने के द्वारा परिकल्पित एकता स्वत: या आसानी से नहीं मिल जाती। इससे बहुत सा त्याग काफी सहयोग और दम्पत्ति की भलाई के लिए एक-दूसरे की बातों व इच्छाओं को और अधिकारों को मानना पड़ता है। एकता से काम बनता है। कोई विवाह चाहे जितना भी लम्बा क्यों न हो यह ''एक होने'' की प्रक्रिया बना रहता है।

सारांश

लोगों के तलाक की दुखद कहानियों की कमी नहीं है। अपने पतियों द्वारा छोड़ दिए जाने से जवान स्त्रियां नन्हे बच्चों के साथ कंगाल हो जाती हैं। वे जीविका कमाने, अपने बच्चों को खाना खिलाने, कपड़े दिलाने और देखभाल करने की कोशिश करती हुई बच्चों का पालन पोषण करती हैं जबकि उन्हें पिता और माता दोनों की आवश्यकता है। वे आमतौर पर बच्चों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपनी भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को नज़रअंदाज़ कर देती हैं। पुरुषों को दो परिवारों को पालने के कारण खर्च उठाना मुश्किल हो जाता है; कई बार उन्हें उन बच्चों से जिन्हें वे प्यार करते हैं, मिलने नहीं दिया जाता। तलाक चाहे किसी भी कारण से हो, उसमें संलिप्त सब लोगों के लिए एक त्रासदी है।

विवाह हो जाने पर आप तलाक से कैसे बच सकते हैं? परमेश्वर की योजना को मानें। विवाह के स्थायीत्व को मान लें और अपने जीवन साथी के साथ एकता बनाने पर काम करें।

टिप्पणियां

[1]इस वचन में और व्याख्याएं सुझाई गई हैं। यहां शामिल विचार पाया जाने वाला सबसे प्रसिद्ध विचार लगाता और यीशु के शब्दों का स्पष्ट अर्थ बताता प्रतीत होता है। [2]यह वाक्यांश साथी द्वारा व्यभिचार किए जाने के कारण निर्दोष पक्ष द्वारा लिए गए तलाक के लिए है। [3]जॉर्जिया शैफर, ''व्हट आई विश आई डिडंट नो बिफोर आई गॉट डिवोर्सड,'' http://www.christianity.com/mp/2005/002/7.46.html. [4]''करना ही पड़ेगा'' यह कहने का औपचारिक ढंग है कि ''हमें करना आवश्यक है!'' या ''करना ही पड़ेगा!'' यहां कहने का मतलब यह है कि अपने मन की इच्छा अनुसार करने का कोई विकल्प नहीं है।